CLASS : 12th (Sr. Secondary) **3662/3612**

Series : SS-M/2018 ***SET : A, B, C & D***

Total No. of Printed Pages : **48**

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

HISTORY

(Academic/Open)

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*

(ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*

(iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*

(iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.*

(v) *Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.*

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

(ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।

(iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।

(v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।

(vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही है, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

SET – A

खण्ड – क

1. समाज के शासकों द्वारा .....

सत्ता के केन्द्र अथवा सत्ताधारी लोगों के नारे में पुरातात्विक विवरण से हमें कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिलता। पुरातत्त्वविदों ने मोहनजोदड़ों में मिले एक विशाल भवन को एक प्रासाद की संज्ञा दी परन्तु इससे संबद्ध कोई अन्य वस्तुएँ नहीं मिली हैं एक पत्थर की मूर्ति को 'पुरोहित-राजा' की संज्ञा दी गई थी और यह नाम आज भी प्रचलित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पुरातत्त्वविद् मेसोपोटामिया के इतिहास तथा वहाँ के पुरोहित राजाओं से परिचित थे और यही समानताएँ उन्होंने सिंधु क्षेत्र में भी ढूँढी। हड़प्पा सभ्यता की आनुष्ठानिक प्रथाएँ अभी तक ठीक प्रकार से समझी नहीं जा सकीं हैं और न ही यह जानने की साधन उपलब्ध हैं कि क्या जो लोग इन अनुष्ठानों का निष्पादन करते थे, उन्हीं के पास राजनैतिक सत्ता होती थी।

कुछ पुरातत्त्वविद् इस मत में विश्वास करते हैं कि हड़प्पाई समाज में शासक होते ही नहीं थे तथा सभी सामाजिक स्थिति समान थी। दूसरी ओर कुछ पुरातत्त्वविद् यह मानते हैं कि यहाँ कोई एक शासक नहीं बल्कि कई शासक थे जैसे मोहनजोदड़ों, हड़प्पा आदि के अपने अलग-अलग राजा होते थे। कुछ अन्य यह तर्क देते हैं कि यह एक ही राज्य था जैसा कि पुरावस्तुओं में समानताओं, नियोजित बस्तियों के साक्ष्यों, ईंटों के आकार में निश्चित अनुपात, तथा बस्तियों के कच्चे माल के स्रोतों के समीप संस्थापित होने से स्पष्ट हैं। अभी तक की स्थिति में अन्तिम परिकल्पना सबसे युक्तिसंगत प्रतीत होती है क्योंकि यह कदाचित

संभव नहीं लगता कि पूरे के पूरे समुदायों द्वारा इकट्ठे जटिल निर्णय लिए तथा कार्यान्वित किए जाते होगें। 6

अथवा

हड़प्पा लोगों की जीविका निर्वाह प्रणाली के मुख्य साधन निम्नलिखित थे :

1. **कृषि :** लोग कई प्रकार की खेती करते थे जैसे पेड़, पौधों से भोजन प्राप्त करते थे कृषि में गेहूँ, जौ, दाल, चना तथा तिल शामिल थे। इन अनाजों के दाने कई हड़प्पा स्थलों में मिले हैं।

2. लोग बाजरा तथा चावल भी खाते थे। बाजरे के दाने गुजरात से मिले हैं।

3. **पशु-पालन :** हड़प्पा के लोग जानवरों से भी भोजन प्राप्त करते थे, इनमें भेड़, बकरी, भैस तथा सूअर आदि शामिल थे।

4. हिरण तथा घड़ियाल की हड्डियाँ भी मिली है। इससे अनुमान लगाया गया है कि हड़प्पा निवासी इनका मांस खाते थे कुछ लोग पक्षियों का मांस भी खाते थे।

5. अपना पेट पालने के लिए कुछ लोग व्यापार भी करते थे नगरों में आपसी व्यापार होता था। अफगानिस्तान और इरान के साथ भी व्यापार होता था।

6. कुछ लोग जीवन-निर्वाह के लोग छोटे-छोटे उद्योग धन्धों में लगे हुए थे जैसे मिट्टी, तांबा तथा पीतल के बर्तन बनाने में कुशल थे। वे सोने चाँदी के सुंदर आभूषण भी बनाते थे। 6

2. बाबा गुरु नानक देव की मुख्य शिक्षाओं का वर्णन तथा विचारों का संप्रेषण : बाबा गुरु नानक देव (1469-1539) की शिक्षाएँ उनके भजनों में निहित हैं। इनसे पता चलता है :

(i) उन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया।

(ii) सभी बाहरी आडंबरों को उन्होंने अस्वीकार किया जैसे यज्ञ, अनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति-पूजा व कठोर तप।

(iii) हिन्दू और मुसलमानों के धर्म-ग्रन्थों को भी उन्होंने नकारा।

(iv) बाबा नानक के लिये परम पूर्ण रब का कोई लिंग या आकार नहीं था।

(v) रब की उपासना के लिए एक सरल उपाय निरंतर नाम का जाप बताया।

विचारों का संप्रेषण :

(i) उन्होंने स्थानीय भाषा पंजाबी भाषा के प्रयोग पर बल दिया और शब्दों का उच्चारण किया। बाबा गुरु नानक यह शब्द अलग-अलग रागों में गाते थे और उनका सेवक मरदाना रबाब बजाकर उनका साथ देता था।

(ii) गुरु नानक देव जी ने अपने अनुयायियों को एक समुदाय में संगठित किया। सामुदायिक उपासना (संगत) के नियम निर्धारित किये, जहाँ सामूहिक रूप से पाठ होता था। 4 + 2

अथवा

सूफी और भक्ति प्रचारकों ने अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने के लिए स्थानीय भाषाओं का प्रयोग किया ताकि आम लोगों को उनके विचार समझने में आसानी रहे उदाहरणतः -

(i) अलवार तथा नयनार संतों ने अपना प्रचार तमिल भाषा में किया।

(ii) भक्त कबीर के दोहे तथा छंद कई भाषाओं में मिलते है इनमें से कुछ संत भाषा में है जो निर्गुण कवियों की विशेष बोली थी।

(iii) सूफी संतों ने भी स्थानीय भाषाओं को अपनाया जैसे कि बाबा फरीद ने पंजाबी भाषा को अपनाया।

(iv) गुरु नानक देव जी ने भी पंजाबी भाषा में अपना प्रचार किया। 6

3. अंग्रेजों ने विद्रोह को कुचलने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए :

(i) उत्तर भारत को दोबारा जीतने के लिए तथा विद्रोह को शांत करने के लिए कई कानून पारित किए।

(ii) मई-जून 1857 ई० में पारित कानूनों द्वारा सारे उत्तर भारत में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया।

(iii) फौजी अफसरों और यहाँ तक आम अंग्रेजों को भी ऐसे हिन्दुस्तानियों पर मुकदमा चलाने और उनको सजा देने का अधिकार दे दिया गया जिन पर विद्रोह में शामिल होने का शक था।

(iv) सभी प्रकार के कानून और मुकदमें में सामान्य प्रक्रिया रद्द कर दी गई थी और स्पष्ट कर दिया गया था कि विद्रोह की केवल एक ही सजा हो सकती है - सजा-ए-मौत। 6

अथवा

क्रांति के सामाजिक कारण/धार्मिक कारण :

(i) **सामाजिक सुधार कानून :** सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या वध इत्यादि को रोकने के लिए कानून बताए गए।

(ii) **पश्चिमी शिक्षा का प्रसार :** भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर आघात, भारतीय समाज के रीति-रिवाजों पर पाबन्धी लगाना।

(iii) इसाई पादरियों द्वारा भारतवासियों को इसाई बनाना।

(iv) 1856 ई० में एक ऐसा सैनिक कानून पास किया गया जिसके अनुसार सैनिकों को समुद्र पार भेजा जा सकता था, परन्तु हिन्दू सैनिक समुद्र पार जाना अपने धर्म के विरुद्ध मानते थे।

(v) चर्बी वाले कारतूस जारी करना। 6

4. (i) राष्ट्रीय आन्दोलन ने एक नए युग में प्रवेश किया। सभी वर्गों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस कारण उनमें एक नई राष्ट्रीय जागृति का विकास हुआ।

(ii) इस आन्दोलन में हिन्दू तथा मुसलमान कन्धे से कन्धा मिलाकर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लड़े परिणाम स्वरूप उनमें परस्पर एकता मजबूत हुई।

(iii) इस आन्दोलन के कारण कांग्रेस पार्टी लोगों में बहुत लोकप्रिय हुई। उन्हें यह विश्वास हो गया कि उसके अधीन भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त करवाया जा सकता है।

(iv) आन्दोलन के दौरान सरकार द्वारा आन्दोलनकारियों पर किए गए अत्याचारों से उनके मन में ब्रिटिश सरकार के प्रति भय जाता रहा।

(v) ब्रिटिश माल के बहिष्कार तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से भारतीय उद्योगों को प्रोत्साहन मिला।

(vi) राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के कारण शिक्षा के प्रसार को प्रोत्साहन मिला।

(vii) स्त्रियों के आन्दोलन में भाग लेने से उनमें एक नया आत्मविश्वास पैदा हुआ।

(viii) इस आन्दोलन के कारण छुआछूत तथा मद्यपान जैसी सामाजिक बुराइयों को भी दूर करने में सहायता मिली। 6

अथवा

असहयोग आन्दोलन एक तरह का प्रतिरोध :

कारण :

(i) प्रथम युद्ध के प्रभाव

(ii) रौलट ऐक्ट

(iii) जलियाँवाला बाग की घटना

(iv) खिलाफत आंदोलन

कार्यक्रम :

(i) नकारात्मक एवं सकारात्मक आंदोलन की प्रगति : गाँधी द्वारा तथा अन्य नेताओं द्वारा पदवियाँ तथा मैडल त्यागना, सरकारी स्कूलों का बहिष्कार, वकीलों द्वारा अदालतों का बहिष्कार, राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना, विदेशी वस्त्रों की होली, हिन्दू-मुस्लिम एकता इत्यादि।

(ii) आन्दोलन का स्थगित होना

(iii) चौरा-चौरी की घटना

(iv) गाँधी की गिरफ्तारी और मुकदमा 6

खण्ड - ख

चार अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर :

5. मैगस्थनीज़ द्वारा पाटलीपुत्र के शासन-प्रबन्ध के बारे में जानकारी : मैगस्थनीज़ के अनुसार शहर की व्यवस्था के लिए 30 सदस्यों की समिति बनी हुई थी। यह समिति पाँच-पाँच सदस्यों के छः बोर्डों में बटी हुई थी। प्रत्येक बोर्ड का कार्य इस प्रकार था :

प्रथम विदेशियों की देखभाल करता था, दूसरा शिल्पकारों की, तीसरा शहर का जन्म-मरण का ब्यौरा रखता था, चौथा व्यापार को देखता था तो पाँचवाँ बोर्ड तैयार माल की जाँच पड़ताल करता था। छठे बोर्ड का कार्य शहर से बिक्री कर एकत्रित करना था। यह सारी जानकारी उसने अपनी पुस्तक 'इंडिका' में दी है। 4

6. बर्नियर बताता है कि भारत में लगभग 15% आबादी नगरों में रहती है। यह शहरी जनसंख्या अनुपात तत्कालीन पश्चिमी यूरोप से अधिक था। वह भारतीय नगरों को शिविर नगर कहता है क्योंकि इन नगरों का अस्तित्व शहरी शिविर के साथ था, शिविर लगते ही ये विकसित हो जाते थे जब प्रस्थान के साथ ही नगरों का पतन भी हो जाता था। इन नगरों की सामाजिक व आर्थिक आधारशिला ठीक नहीं थी बल्कि राजकीय शिविर पर भी आश्रित थी। 4

7. महानवमी डिब्बा एक विशालकाय मंच है जो शहर के सबसे ऊँचे स्थानों में से एक पर स्थित है। इस लकड़ी पर एक संरचना बनी हुई थी। मंच के आधार पर उभारदार नक्काशी की गई है। मंच की दूसरी मंजिल भी बनाई गई थी। दूसरी मंजिल तक जाने के लिए सीढ़ीयाँ बनाई गई थी। यह मंच 11000 वर्ग फीट वाले विशाल मंच पर 40 फुट ऊँचा मंच था। 4

8. ग्राम पंचायत का गठन किस प्रकार होता था ? ग्राम पंचायत में मुख्य रूप से गाँव के सम्मानित बुजुर्ग होते थे। इन बुजुर्गों में भी उनको महत्त्व अधिक दिया जाता था जिनके पास पुश्तैनी जमीन या सम्पत्ति होती थी। प्रायः गाँव में सभी जातियों के प्रतिनिधि शामिल होते थे। परन्तु फिर भी साधन सम्पन्न व उच्च जातियों को ही पंचायत में अधिक महत्त्व दिया जाता था। भूमिहीन वर्ग को बहुत कम महत्त्व दिया जाता था। 4

9. अठारवीं सदी में शहरी केन्द्रों में परिवर्तन इस सदी में शहरों में परिवर्तन का एक नया चरण आरम्भ हुआ। व्यापारिक गतिविधियों के कारण बंदरगाह नगर तेजी से मद्रास, कलकत्ता तथा बंबई आदि में विकास हुआ। ये शहर औपनिवेशिक प्रशासन और सत्ता के केन्द्र भी बन गए। नये भवनों और संस्थानों का विकास हुआ और शहरी केन्द्रों को नए तरीकों से व्यवस्थित किया गया। इसमें नए रोजगार विकसित हुए और लोग निरंतर शहरों की ओर जाने लगे। लगभग 1800 तक ये नगर जनसंख्या के दृष्टि से भारत के विशालतम् शहर बन गए। 4

खण्ड – ग

दो अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर :

10. हड़प्पा में सिंचाई के साधन थे :

(i) कुएँ

(ii) नदियाँ

(iii) झीलें

(iv) जलाशय 2

11. अभिलेख मोहरों, प्रस्तर स्तम्भों, स्तूपों, चट्टानों और ताम्रपत्रों, ईंटों या मूर्तियों पर भी मिलते हैं। 2

12. जैन धर्म शब्द 'जिन' शब्द से बना है जिसका अर्थ है विजेता अर्थात जिसने अपनी इन्द्रियों को विजय कर लिया हो। 2

13. इब्नबतूता दौलताबाद के बारे में बताते हैं कि यह दिल्ली से किसी तरह कम नहीं था। यहाँ पुरुष और महिला गायकों के लिए एक बाजार है जिसे तारावबाद कहते है। बाजार सुन्दर हैं प्रत्येक दुकान का द्वार मकान के आवास में खुलता है। 2

14. गुरु नानक देव जी की मुख्य रचनाएँ हैं : 2

जवुजो साहिब एवं नार मल्लार

15. मुगलकाल में ग्रामीण व्यवस्था में शहरीकरण का थोड़ा विकास हुआ गाँव और शहरों के बीच व्यापारिक रिश्ते बढ़े। अब नकदी में भी काम होने लगा। 2

16. अकबर ने 1579 ई० में फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना की स्थापना की। इसमें हिन्दुओं, मुसलमानों, जैन, पारसीयों तथा ईसाई आदि की बातें सुनी। उनके वाद-विवाद से अकबर को सभी धर्मों की अच्छाईयों और कमियाँ की जानकारी मिली। 2

17. शाहजहाँ के पिता का नाम जहाँगीर था। उसने अपनी पत्नी मुमताज महल की मृत्यु के पश्चात् आगरा में ताजमहल बनवाया। उसके पुत्रों में उत्तराधिकार का युद्ध 1657-58 में लड़ा गया जिसमें दाराशिकोह, मुराद व शुजा मारे गए औरंगजेब विजयी रहा। 2

18. 'दीवानी' शब्द का अर्थ है, भू-राजस्व लेने का अधिकार। 1765 ई० में इलाहाबाद की संधि के अनुसार अंग्रेजों को बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को प्राप्त हो गई। 2

19. असहयोग का अर्थ है सरकार के किसी कानून को न मानना और सरकारी कार्यों में असहयोग की नीति को अपनाना। 2

खण्ड – घ

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर : 16

20. (घ)

21. (क)

22. (ख)

23. (क)

24. (ख)

25. (ग)

26. (ख)

27. (ग)

28. (ग)

29. (घ)

30. (ख)

31. (घ)

32. (क)

33. (ख)

34. (ख)

35. (ख)

SET – B

खण्ड – क

1. मोहनजोदड़ों की कुछ विशिष्टताओं का वर्णन :

(i) मोहनजोदड़ो : एक नियोजित शहरी केन्द्र

(ii) निचला शहर

(iii) जल-निकास प्रणाली

(iv) आवास अथवा मकानों का निर्माण गृह स्थापत्य

(v) सड़के तथा गलियाँ

(vi) दुर्ग

(vii) मालगोदाम अथवा अन्नागार

(viii) विशाल स्नानागार 6

अथवा

हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण :

1. बाढ़े और भूकम्प

2. सिंधु नदी का मार्ग बदलना
3. क्षेत्र में बढ़ती शुष्कता और घग्घर नदी का सूख जाना
4. आर्यों के आक्रमण
5. पर्यावरण असन्तुलन तथा आर्थिक-राजनैतिक प्रणाली का कमजोर होना। 6

2. भारत में सूफीमत का विकास :

इस्लाम की आरम्भिक शताब्दियों में धार्मिक और राजनैतिक संस्था के रूप में खिलाफत की बढ़ती शक्ति के विरुद्ध कुछ आध्यात्मिक लोगों का रहस्यवाद तथा वैराग्य की ओर रूझान बढ़ने लगा। इन्हीं लोगों को सूफी कहा गया। सूफीओं ने निम्नलिखित सिद्धान्तों पर जोर दिया।

(i) इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं और धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की।

(ii) इसके विपरित उन्होंने मुक्ति पाने के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।

(iii) इन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल बताते हुए उन का अनुसरण करने की सीख दी।

(iv) सूफियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

खानकाह : ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आन्दोलन था जिसका सूफी और कुरान से जुड़ा अपना साहित्य था। संस्थागत दृष्टि से सूफी अपने आपको एक संगठित समुदाय - खानकाह (फारसी) के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे।

खानकाहों का नियन्त्रण शेख (अरबी), पीर अथवा मुर्शीद (फारसी) के हाथ में था। वे अनुयायियों की भरती करते थे और अपने वारिस (खलीफा) की नियुक्ति करते थे।

सिलसिला : 12वीं शताब्दी के आस-पास इस्लामी दुनिया में सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा। सिलसिला का अर्थ है जंजीर जो शेख और मुरीद के बीच एक रिश्ते का प्रतीक है जिसका पहली अटूट कड़ी पैगम्बर मोहम्मद से जुड़ी है। इस कड़ी द्वारा आध्यात्मिक शक्ति और अशीर्वाद मुरीदों तक पहुँचता था।

पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी। इस तरह पीर की बरखी पर दरगाह पर जियारत के लिए परिपाटी चल निकली। क्योंकि लोगों का मानना था कि मृत्यु के बाद पीर ईश्वर से एकीभूत हो जाते हैं और इस तरह पहले की बजाए उनके अधिक करीब हो जाते है। इसके अतिरिक्त लोग आध्यात्मिक और दैहिक कामनाओं की पूर्ति के लिए उनका अशीर्वाद लेने जाते थे। 6

अथवा

कबीर के मुख्य उपदेशों का वर्णन :

कबीर सूफी संतों में विशेष स्थान रखते हैं उन्होंने लोगों को निम्न उपदेश दिए :

(i) उन्होंने बहुदेववाद तथा मूर्ति-पूजा का विरोध किया।

(ii) कबीर ने जिक्र और इश्क के सूफी सिद्धान्तों के प्रयोग द्वारा सिमरन नाम पर बल दिया।

(iii) कबीर के अनुसार परम परमात्मा एक है भले ही विभिन्न संप्रदायों के लोग उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं।

(iv) उन्होंने परमात्मा को निराकार बताया है।

(v) उनके अनुसार भक्ति के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

(vi) उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों के धार्मिक आडम्बरों का बड़ा विरोध किया।

(vii) वह जाति प्रथा के भी विरुद्ध थे।

विचारों का संप्रेषण : कबीर ने अपने विचारों को काव्य की आम बोल-चाल की भाषा में व्यक्त किया जिसे आसानी से समझा जा सकता है। कभी-कभी उन्होंने बीज लेखन की भाषा का प्रयोग भी किया जो कठिन थी। उनके देहान्त के बाद उनके अनुयायियों ने अपने प्रचार-प्रसार द्वारा उनके विचारों का संप्रेषण किया। 6

3. विद्रोही क्या चाहते थे :

बतौर विजेता कठिनाईयों, चुनौतियों और बहादुरी के बारे में अंग्रेजों की अपनी राय थी। वे विद्रोहियों को अहसान फरामोश और बर्बर लोगों का झुंड मानते थे विद्रोहियों को कुचलने का मतलब यह भी था कि उन की आवाज को दबा दिया जाए। कुछ विद्रोहियों को ही इस घटनाक्रम के बारे में अपनी बात दर्ज करने का मौका मिला। यूँ भी विद्रोहियों में ज्यादातर सिपाही आम लोग थे जो पढ़े-लिखे नहीं थे। इस प्रकार अपने विचारों का प्रसार करने और लोगों को विद्रोह में शामिल करने के लिए जारी की गई कुछ घोषणाओं व ईश्तदारों के सिवाय हमारे पास ऐसी ज्यादा चीजें नहीं है जिनके आधार पर हम विद्रोहियों के नजरिए की समझ सकें :

(i) एकता की कल्पना : 1857 में विद्रोहियों द्वारा जारी की गई घोषणाओं में जाति और धर्म का भेद किए बिना समाज के सभी तबकों का आह्वान किया जाता था। सभी हिन्दू मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं का ख्याल रखा जाता था।

बहादुरशाह के नाम से जारी की गई घोषणा में मुहम्मद और महावीर दोनों की दुहाई देते हुए जनता से इस लड़ाई में शामिल होने का आह्वान किया गया।

(ii) उत्पीड़न के प्रतीकों के खिलाफ इन घोषणाओं में ब्रिटिश राज से संबंधित हर चीज को पूरी तरह खारिज किया जा रहा था। देशी रियासतों पर कब्जे और समझौतों का उल्लंघन करने के लिए अंग्रेजों की निन्दा की जाती थी। विद्रोही नेताओं का कहना था कि अंग्रेजों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। लोगों को किस बात पर गुस्सा था कि ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था ने बड़े-छोटे भू-स्वामियों को जमीन से बेदखल कर दिया था और विदेशी व्यापार ने दस्तकारों और बुनकरों को तबाह कर डाला था। ब्रिटिश शासन के हर पहलू पर निशान साधा जाता था। फिरंगियों पर स्थापित और सुंदर जीवन-शैली को नष्ट करने का आरोप लगाया जाता था। विद्रोही अपनी उस दुनिया को दोबारा बहाल करना चाहते थे।

विद्रोही उदघोषणाएँ इस व्यापक डर को व्यक्त करती थी कि अंग्रेज, हिन्दुओं और मुसलमानों की जाति और धर्म को नष्ट करने पर तुले हैं और वे लोगों को इसाई बनाना चाहते हैं। इसी डर की वजह से लोग चल रहीं अफवाहों पर भरोसा करने लगे। लोगों को प्रेरित किया गया कि वे इकट्ठे मिलकर अपने रोजगार, धर्म, इज्जत और अस्मिता के लिए लड़े। यह व्यापक सार्वजनिक भलाई की लड़ाई होगी।

विद्रोहियों ने जानबूझ कर उनके विरुद्ध हमले किए जिन्हें अंग्रेजों की मदद की। गावों में उन्होने सूदखोरों के

बही-खाते जला दिए और उनके घर तोड़-फोड़ डाले। इससे पता चलता है वे समाज में ऊँच-नीच को खत्म करना चाहते थे। इसमें हमें एक वैकल्पिक दृष्टि, संभवतः एक ज्यादा समतापरक समाज की कल्पना दिखाई देती है। पर यह सोच उनकी घोषणाओं में नहीं दिखाई देती है। उनमें तो फिरंगीराज के खिलाफ तमाम सामाजिक समूहों को एक-जुट करने का ही आह्वान किया जाता था।

वैकल्पिक सत्ता की तलाश :

ब्रिटिश शासन ध्वस्त हो जाने के बाद दिल्ली, लखनऊ और कानपुर जैसे स्थानों पर विद्रोहियों ने एक प्रकार की सत्ता और शासन संरचना स्थापित करने का प्रयास किया। बेशक यह प्रयोग ज्यादा समय तक नहीं चला। लेकिन इन कोशिशों से पता चलता है कि विद्रोही नेता अठारहवीं सदी की पूर्व ब्रिटिश दुनिया को पुनर्स्थापित करना चाहते थे। इन नेताओं ने पुरानी दरबारी संस्कृति का सहारा लिया। विभिन्न पदों पर नियुक्तियाँ की गई। भू-राजस्व वसूली और सैनिकों के वेतन के भुगतान का इंतजाम किया गया। लूटपाट बंद करने के लिए हुक्मनामे जारी किए गए। इसके साथ-साथ अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध जारी रखने की योजनाएँ भी बनाई गई। सेना की कमान शृंखला तय की गई। इन सारे प्रयासों में विद्रोही 18वीं सदी के मुगल जगत से ही प्ररेणा ले रहे थे - यह जगत उन तमाम चीजों का प्रतीक बन गया जो उनसे छिन चुकी थी। परन्तु यह सारे प्रयास अन्त में असफल सिद्ध हुए और अंग्रेजों ने इसका दमन कर दिया। 6

अथवा

विद्रोहियों के बीच एकता स्थापित .....

(i) 1857 ई० में क्रान्तिकारियों ने अपनी घोषणाओं में जाति और धर्म के भेदभाव के बिना समाज के सभी लोगों को एक मंच पर इकट्ठा करने का आह्वान किया गया।

(ii) यद्यपि कुछ घोषणाएँ मुस्लिम शासकों द्वारा जारी की जाती थी परन्तु फिर भी उसमें हिन्दुओं की भावनाओं का ध्यान रखा जाता था।

(iii) इस विद्रोह को एक ऐसे युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया गया जिसमें हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को ही समान रूप से प्रभावित करते थे।

(iv) इश्तहारों में अंग्रेजों से पहले के हिन्दू-मुस्लिम अतीत की ओर संकेत किया जाता था और मुगल साम्राज्य के अधीन विभिन्न समुदायों के सहअस्तित्व का गौरवगान किया जाता था।

(v) बहादुरशाह के नाम से जारी घोषणा में मुहम्मद और महावीर, दोनों की दुहाई देते हुए जनता से हम इस लड़ाई में शामिल होने का आह्वान किया गया था। यद्यपि अंग्रेजों ने 1857 ई० में बरेली के हिन्दुओं को भड़काने के लिए, 50,000 रु० खर्च किए परन्तु उनकी कोशिशें असफल रहीं। 6

4. (A) **भारत छोड़ों आन्दोलन के कारण :**

(i) भारत पर जापान का खतरा बराबर बना हुआ था। इसलिए गाँधी जी ने कहा कि अंग्रेजों को चाहिए कि वे भारत को जापान के लिए यदि नहीं तो भारतीयों के लिए छोड़ दें।

(ii) कैबिनेट मिशन की असफलता से निराशा का वातावरण इसलिए जवाहर लाल नेहरु के अनुसार "जनता की निकट निराशा को साहस और प्रतिरोध के भावना में बदलना आवश्यक था।

(iii) गाँधी जी ने समझ लिया था कि स्वतन्त्रता के लिए विद्रोह आवश्यक है उनके विचार "करो या मरो" (Do or Die) में परिवर्तित हो गए थे।

(iv) सुभाष चन्द्र बोस के जोशीले भाषण।

(v) भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन बम्बई में हुआ जिसमें 8 अगस्त को "भारत छोड़ो प्रस्ताव" पास कर दिया गया।

(vi) द्वितीय विश्व युद्ध से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई जिसके लिए जनता ने अंग्रेजी शासन को जिम्मेदार माना और उसका ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आक्रोश बढ़ता गया।

(B) (i) आन्दोलन का आरम्भ

(ii) प्रथम चरण

(iii) दूसरा चरण

(iv) तृतीय चरण

(v) सरकारी दमन

(vi) महत्त्व 6

अथवा

(i) ***गाँधी जी के आखिरी बहादुराना दिनों का वर्णन :***

15 अगस्त, 1947 के गाँधी राजधानी में नहीं थे। वे उसे समय कलकत्ता में साम्प्रदायिक सद्भावना को बहाल करने में लगे हुए थे। वे पीड़ितों को सान्त्वना देते हुए अस्पतालों और शरणार्थी शिवरों का चक्कर लगा रहे थे। उन्होंने सिक्कों, हिन्दुओं और मुसलमानों को आपसी वर की भावना को छोड़कर अतीत को भुलाकर भाई चारे और शान्ति से रहने पर बल दिया। गाँधी जी के व्यापक प्रभाव को देखते हुए माउंटबेटन ने उन्हें "एक अकेली फौज" कहा।

(ii) ***धर्मनिरपेक्षता में दृढ़ आस्था :*** उन्होंने दो राष्ट्र-सिद्धान्तों का विरोध किया। कांग्रेस ने आश्वासन दिया कि वह अल्पसंख्यकों के नागरिक अधिकारों के किसी भी अतिक्रमण के विरुद्ध हर मुमकिन रक्षा करेंगे।

(iii) ***शरणार्थियों के प्रति चिन्ता :*** बंगाल में शान्ति की स्थापना के बाद गाँधीजी दिल्ली आए। उस समय तक दिल्ली में पंजाब से बहुत शरणार्थी आ चुके थे।

(iv) **गाँधीजी की शहादत :**

20 जनवरी, 1948 को गाँधीजी पर हमला हुआ लेकिन वे किसी प्रकार विचलित नहीं हुए। वे पाकिस्तान के साथ सम्मान और दोस्ती के सम्बन्ध बनाए रखने पर जोर दे रहे थे। 30 जनवरी, 1948 की शाम को दैनिक प्रार्थना के समय एक धर्मान्ध के हाथों शहीद हो गए। 6

खण्ड - ख

चार अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर :

5. गुप्तकाल में भूमि-अनुदानों की विशेषताएँ :

भूमि अनुदान पत्रों में राजाओं, राज्यधिकारियों, रानियों, शिल्पियों तथा व्यापारियों द्वारा दिए गए धर्मार्थ धन, पशु भूमि आदि का उल्लेख मिलता है। इनकी विशेषताएँ इस प्रकार है :

(i) अधिकांश ये ताम्रपत्र पर खुदे हुए मिले हैं।

(ii) भूमि अनुदानकर्ता इन्हें दान प्राप्तकर्ता को प्रमाणपत्र के रूप में देते थे।

(iii) इन अनुदान पत्रों में भिक्षुओं, ब्राह्मणों, मंदिरों, विहारों और अधिकारियों को दिए गए गाँवों, भूमियों और राजस्व के दानों में विवरण उपलब्ध हैं। 4

6. अलबरूनी के अनुसार :

(i) जाति व्यवस्था में सदस्यता जन्म पर आधारित होती है। जो व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता था उसे समाज में उसी जाति से सम्बन्धित दर्जा दिया जाता था।

(ii) समाज का खंडात्मक विभाजन अर्थात् समाज मुख्य रूप से चार जातियों - ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र में बंटा हुआ था। 4

7. अमर शब्द का अर्थ युद्ध व लड़ाई से है अर्थात अमर नायक प्रशासन व सेना के प्रमुख व्यक्ति होते थे जो किसानों दस्तकारियों व्यापारियों से कर वसूलते थे जिसका एक हिस्सा वह अपने व्यक्तिगत खर्च, सेना, हाथी व घोड़ों को देखभाल के लिए रखते थे और शेष राजस्व खजाने में जमा करवाते थे। 4

8. मुगल काल में महिलाएँ सूत कातने, बर्तन बनाने के लिए मिट्टी को साफ करने, भिगोने तथा गोधने का कार्य करती थीं। वे कपड़े की बुनाई-कढ़ाई भी करती थीं। सामान्य तौर पर जब कृषि कार्य का अधिक दबाव नहीं होता था तो महिलाएँ कुछ न कुछ दस्तकारी का कार्य करती रहती थीं। 4

9. औपनिवेशक शहर में ..... सार्वजनिक स्थान।

(i) नदी या समुद्र के किनारे आर्थिक गतिविधियों के कारण घाटियों का विकास हुआ।

(ii) समुद्र किनारे गोदाम, जहाजरानी उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए बीमा, यातायात डिपो व बैंकों की स्थापना हुई।

(iii) कलकत्ता में स्थित राईट्रस बिल्डिंग एक प्रशासनिक कार्यालय की स्थापना हुई।

(iv) शासक वर्ग के लिए नस्ली विभेद पर आधारित क्लब, रेसकोर्स और रंगमंच बनाए गए।

(v) टाऊन हाल, पार्क, रंगशालाएँ और सिनेमाहाल जैसे सार्वजनिक स्थल सामने आए। 4

खण्ड - ग

दो अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर :

10. हड़प्पा की सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं। 10.5 मीटर चौड़ी सड़क मोहनजोदड़ो में थी जिसे प्रथम सड़क कहा गया है। अन्य सड़के 3.6 से 4 मीटर तक चौड़ी थीं। 2

11. हरिषेण समुद्रगुप्त शासक के दरबार में राजकवि था। उसने प्रयाग प्रशास्ति का लेखन किया जिसमें उसने समुद्रगुप्त के जीवन और सफलताओं का वर्णन किया है। 2

12. धर्म चक्र परिवर्तन से अभिप्राय है कि ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महात्मा बुद्ध ने सारनाथ के स्थान पर अपना पहला धर्म उपदेश, दिया उसे ही धर्म चक्र प्रवर्तन के नाम से जाना जाता है। 2

13. बर्नियर ने कृषकों के बारे में लिखा है कि "हिन्दुस्तान के ग्रामीण जंगलों में काफी भूमि रेतली या बंजर है। यहाँ की खेती अच्छी नहीं है। कृषक जीवन-निर्वहन के साधनों से वंचित कर दिया जाता था। निरंकुशता से हताश ही किसान गाँव छोड़कर चले जाते थे।" 2

14. भारत में इस्लाम धर्म का उदय 7वीं शताब्दी में हुआ। भारत में यह धर्म व्यापारियों के साथ पहुँचा था। व अन्य कारणों से भी इसका विस्तार हुआ। दिल्ली सल्तनत व मुगल साम्राज्य इसके उदाहरण हैं। 2

15. जंगलवासियों के जीवन में बदलाव के किन्हीं दो कारणों का वर्णन : मुगलकाल में जंगलवासियों के जीवन में बदलाव के दो कारण इस प्रकार हैं :

(i) व्यापार के कारण जंगलों की सफाई की गई तथा शहद, दूध व लाख की खरीद-बेचने उनकी परम्परागत जीवन शैली को बदला।

(ii) राज्यों की विस्तारवादी नीति व हाथियों की आवश्यकता ने जंगलवासियों को प्रभावित किया। 2

16. मुगल प्रांतीय प्रशासन की ***दो*** विशेषताएँ :

(i) साम्राज्य को विभिन्न प्रांतों में बाँटा गया था।

(ii) सूबेदार प्रांत का सर्वोच्च अधिकारी था।

(iii) दीवान प्रांत का प्रमुख वित्त अधिकारी था। 2

17. बाबर ने भारत में ***चार*** युद्ध किए :

(i) पानीपत का प्रथम युद्ध 1526 ई०

(ii) कान्वाह का युद्ध 1527 ई०

(iii) चन्देरी का युद्ध 1528 ई०

(iv) घाघरा का युद्ध 1529 ई० 2

18. स्थाई बन्दोबस्त के अनुसार जमींदारों को सरकार को प्रतिवर्ष एक निश्चित राशि देनी होती थी। यदि जमींदार यह राशि नहीं चुकाते थे तो उन्हें अपनी जमीन सरकार को देनी पड़ती थी। अतः कई जमींदार रैयतों से समय पर कर वसूल न कर पाने के पूरी रकम चुकाने में असमर्थ होते थे। फलस्वरूप उनपर बकाया राशि लगातार बढ़ रही थी। कंपनी उसे लंबे समय तक सहन नहीं कर सकती थी। अतः राजस्व घाटे को पूरा करने के लिए अधिकतर जमींदारियाँ नीलाम कर दी गई। 2

19. **रौलट एक्ट :** प्रथम युद्ध के पश्चात अंग्रेज सरकार ने प्रेस पर पाबन्दी लगाने के लिए अंग्रेज रौलट की अध्यक्षता में यह कानून 1918 ई० में पास किया गया अतः किसी भी व्यक्ति को शंका के आधार पर बन्दी बनाया जा सकता था जिसे काला कानून का नाम दिया गया। 2

खण्ड – घ

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर : 16

20. (घ)

21. (क)

22. (क)

23. (घ)

24. (ग)

25. (क)

26. (घ)

27. (ख)

28. (ग)

29. (क)

30. (ग)

31. (क)

32. (ग)

33. (ग)

34. (घ)

35. (ख)

SET – C

खण्ड – क

1. जल निकासी प्रणाली :

हड़प्पा शहर की सबसे अनूठी विशेषताओं में से एक ध्यानपूर्वक नियोजित जल निकास प्रणाली थी। ऐसा लगता है कि नालियों और गलियों की संरचना पहले की गई थी और बाद में इनके साथ घरों का निर्माण किया गया था। यदि आप निचले शहर के नक्शे को देखें तो आप यह जान जायेंगे कि सड़कों तथा गलियों को लगभग एक ही ग्रिड पद्धति में बनाया गया था और ये एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। प्रत्येक घर के गन्दे पानी की निकासी एक पाइप से होती थी जो गली की नाली से जुड़ा होता था। उदाहरण के लिए लोथल में मकानों के बनाने के लिए जहाँ कच्ची ईंटों का इस्तेमाल हुआ है वहीं नालियाँ पक्की ईंटों से बनाई गई थीं। नालियों के विषय में मैके नामक पुरातत्त्वविद् (Early Indus Civilization) ने लिखा है "निश्चित रूप से यह अब तक खोजी गई सर्वथा संपूर्ण प्राचीन प्रणाली है।"

निःसन्देह जल निकास प्रणाली हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना की ओर संकेत करती है : सड़कें सीधी थी और समकोण से मिलती थीं। वर्षा का पानी निकालने के लिए जल निकास की बढ़िया व्यवस्था थी और गंदी नालियों को साफ करने के लिए मलकुण्ड थे। आधुनिक समय तक अन्य किसी भी नगर में ऐसी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थी। बहुत से नगरों में तो आज भी नहीं है। 6

अथवा

शिल्प उत्पादन के लिए प्रयुक्त कच्चे माल की जानकारी :

हड़प्पा सभ्यता में चन्हूदड़ों, मोहनजोदड़ों की तुलना में एक बहुत ही छोटी सी बस्ती थी, जो पूर्ण रूप से शिल्प उत्पादन से जुड़ी हुई थी। शिल्प कार्यों में मनके बनाना, शंख की कटाई, धातु कर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना शामिल थे।

मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों में विशेष थे : कार्नीलियन (लाल रंग का) जैसपर, स्फटिक, क्वार्ट्ज तथा खेलखड़ी जैसे - पत्थर, तांबा, कांसा तथा सोने जैसी धातुएँ तथा शंख फयान्स और पक्की मिट्टी सभी का प्रयोग मनके बनाने के लिए होता था।

चन्हूदड़ों के अतिरिक्त नागेश्वर तथा बालाकोट दोनों बस्तियाँ समुद्रतट के समीप स्थित थीं, ये शंख, सेलती हुई बस्तियों जिनमें चूड़ियाँ, करछियाँ तथा पच्चीकारी की वस्तुएँ शामिल हैं के निर्माण के विशेष केन्द्र के जहाँ से ये माल दूसरी बस्तियों तक ले जाया जाता था। 6

2. सूफीमत के मुख्य धार्मिक विश्वासों .....

(i) इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में कुछ अध्यात्मिक लोगों का झुकाव रहस्यवाद तथा वैराग की ओर बढ़ने लगा। इन लोगों को सूफी कहा गया है। सूफीमत के धार्मिक विश्वासों तथा आचारों का वर्णन इस प्रकार है :

सूफियों ने रूढ़वादी परिभाषायों तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (ईश्वर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की। उन्होंने कुरान की व्याख्या अपने नीजी अनुभवों के आधार पर की।

(ii) उन्होंने मुक्ति पाने के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।

(iii) उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद को इंसान-ए-कामिल बताते हुए उनका अनुसरण करने की शिक्षा दी।

(iv) वे किसी खलीफा या पीर की देख-रेख में जिक्र (नाम का जाप) चिंतन, समा (गाना), खास (नृत्य), नीति चर्चा, सांस पर नियंन्त्रण आदि क्रियाओं द्वारा मन को प्रशिक्षित करने के पक्ष में थे।

(v) वे सदाचारियों और मानव के प्रति दयालुता पर जोर देते थे।

(vi) वे सूफी सन्तों की दरगाहों पर जियारत (तीर्थयात्रा) करते थे। नाच और संगीत भी जियारत का भाग थे। वे अध्यात्मिक संगीत का महफिल द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास करते थे।

(vii) सूफी संतों के अनुसार ईश्वर एक है, सर्वशक्तिमान है, उसकी सच्चे मन से भक्ति करनी चाहिए। गुरु गति का मार्ग दिखाता है मनुष्य को संसारिक वस्तुओं का मोह छोड़ना चाहिए, जरूरतमंदों की सेवा करनी चाहिए। 6

अथवा

अलवार, नयनार और वीर शैवों द्वारा जाति प्रथा की आलोचना :

अलवार और नयनार तमिलनाडु के भक्ति संत थे अलवार विष्णु के नयनार शिव के भक्त थे।

(i) कुछ इतिहासकार मानते हैं कि अलवार और नयनारों ने जाति प्रथा की कड़ी आलोचना की तथा ब्राह्मण जाति के विरुद्ध आवाज उठाई कुछ सीमा तक यह बात सत्य प्रतीत

होती है। क्योंकि भक्ति संत विविध समुदायों से में जैसे - ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान आदि।

(ii) अलवार और नयनार संतों ने अपनी रचनाओं को वेदों के समान बताकर ब्राह्मणों की प्रभुसत्ता को अस्वीकारा उन्होंने सभी को ईश्वर की संतान बताया है तमिल साहित्य में तोदयड़िप्पोहि नामक एक ब्राह्मण अलवार के काव्य में एक स्थान पर लिखता है "चतुवेदी जो अजनबी है और तुम्हारी सेवा के प्रति निष्ठा नहीं रखते, उनसे भी ज्यादा आप (है विष्णु) उन दासों को पसन्द करते हैं जो आप के चरणों से प्रेम रखते हैं। चाहे वे वर्ण व्यवस्था के परे हों।"

इसी प्रकार अलवार संतों के एक मुख्य काव्य संकलन नलविरादिव्य प्रबंधम् का उल्लेख तमिल वेद के रूप में किया गया है।

(iii) वीर शैव कर्नाटक से संबंध रखते थे वे बासवन्ना के अनुयायी थे। उन्होंने जाति तथा कुछ समुदायों के दूषित होने की ब्रह्मणीय अवधारणा का विरोध किया। 6

3. For Q. No. 3 answer, see **Set-A** 3rd or Answer.

अथवा

अवध में विद्रोह ..... के कारणों की समीक्षा

1857 ई० का विद्रोह का व्यापक रूप अवध में देखने को मिलता है। यहाँ के किसान व दस्तकार से लेकर ताल्लुकदार और नवाबी परिवार के सदस्यों सहित सभी वर्गों ने वीरतापूर्वक संघर्ष किया। हर एक गाँव से लोग विद्रोह में शामिल हुए। ताल्लुकदारों ने उन सभी गाँवों पर अपना पुनः अधिकार कर लिया जो अवध विलय से

पहले उनके पास थे किसानों ने भी उनका साथ दिया। इस व्यापक विद्रोह के निम्नलिखित कारण थे :

(i) अवध का विलय

(ii) ताल्लुकदारों की जागीरें छीनना

(iii) दोषपूर्ण भू-राजस्व व्यवस्था

(iv) किसानों से अधिक राजस्व की माँग

(v) सामाजिक व्यवस्था को भंग करना

(vi) अवध के लोगों की नवाब के प्रति सम्मान एवं निष्ठा 6

4. ***निजी पत्रों और आत्मकथाओं से :***

किसी व्यक्ति के जीवन को समझने के लिए निजी पत्र एवं उस व्यक्ति द्वारा लिखित आत्मकथा एक महत्त्वपूर्ण, भूमिका निभाती है क्योंकि इन निजी पत्रों में प्रायः वे बातें भी मिल जाती हैं जिन्हें सार्वजनिक तौर पर अभिव्यक्त नहीं किया गया होता। निजी पत्रों में बहुत सी अन्य बातों के अतिरिक्त लिखने वाले की पीड़ा, आक्रोश, बेचैनी और असंतोष, आशा और हताशा इत्यादि की झलक भी मिल जाती है। राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में निजी पत्राचार में ऐसे कितने ही उदाहरण मिल जायेंगे। उदाहरण के लिए 1936 के वर्ष के कुछ पत्रों को देखें तो आत्मकथाएँ भी हमें उस अतीत का ब्योरा देती है जो मानवीय विवरणों के हिसाब से काफी समृद्ध होता है। परन्तु यहाँ भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम आत्मकथाओं को किस तरह पढ़ते हैं और उनकी कैसे व्याख्या करते हैं हमें यह याद रखना चाहिए कि ये आत्मकथाएँ प्रायः स्मृति के आधार पर लिखी जाती थी उनसे हमें केवल उन्हीं बातों का पता चलता है कि लिखने वाले को क्या याद रहा था उसे कौन-सी चीजें महत्त्वपूर्ण दिखाई दी या वह क्या याद रखना चाहता था वह

औरों की नजर में अपनी जिंदगी को किस तरह दर्शाना चाहता है। आत्मकथा लिखना अपनी तस्वीर गढ़ने का एक तरीका है। अतः हमें इन विवरणों की पढ़ते समय यह ध्यान रखना है कौन-सी बातें उसने छुपाई है। 6

अथवा

गोलमेज़ सम्मेलनों में वार्ता का कोई नतीजा क्यों नहीं निकल पाया जिससे आन्दोलन को समाप्त करने के लिए अंग्रेज सरकार ने लंदन में गोलमेज सम्मेलनों का आयोजन शुरू किया। पहला गोलमेज़ सम्मेलन नवम्बर, 1930 में आयोजित किया गया। जिसमें देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। इसी कारण अंततः यह बैठक निरर्थक साबित हुई। जनवरी, 1931 ई० में गाँधी जी को जेल से रिहा किया गया। अगले ही महीने वायसराय के साथ उनकी कई लंबी बैठकें हुईं।

उन्हीं बैठकों के बाद "गाँधी-इर्विन समझौते" पर सहमति बनी जिसकी शर्तों में सविनय आन्दोलन को वापिस लेना तथा अगले गोलमेज़ सम्मेलन में भाग लेना स्वीकार करना शामिल था।

अतः दूसरा गोलमेज़ सम्मेलन 1931 ई० के आखिर में लंदन में आयोजित हुआ उसमें गाँधी जी कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे। गाँधी जी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। इस दावे को तीन पार्टियों ने चुनौती दी। मुस्लिम लीग का कहना था कि वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है। दूसरे राजे-रजवाड़ों का दावा था कि कांग्रेस का उनके नियन्त्रण वाले भू-भाग पर कोई अधिकार नहीं है। तीसरी चुनौती तेज-तर्रार वकील और विचारक बी० आर० अंबेडकर की तरफ से थी जिनका कहना था कि गाँधी जी और कांग्रेस पार्टी निचली जातियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते लंदन में हुआ यह

सम्मेलन किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका इसलिए गाँधी जी को खाली हाथ लौटना पड़ा था। इसी प्रकार तीसरा सम्मेलन (1932) भी असफल रहा। 6

खण्ड - ख

चार अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर :

5. प्रयाग प्रशस्ति हरिषेण द्वारा लिखा गया था, जो समुद्रगुप्त से संबंध रखता है, अभिलेख की 33 लाइनें हैं जो संस्कृत में लिखे भाव में है। इससे हमें समुद्रगुप्त के जीवन और उसकी सफलताओं की जानकारी मिलती है। 4

6. इब्नबतूता द्वारा दास प्रथा का वर्णन इब्नबतूता लिखता है कि दास बाजार में उसी प्रकार बिकते थे जैसे कि अन्य दैनिक वस्तुएँ। लोग इन दास दासियों को घरेलू कार्यों तथा उपहार इत्यादि के लिए खरीदते थे। वह जब स्वयं सिन्ध पहुँचा तो उसने सुल्तान मुहम्मद तुगलक को भेंट देने के लिए घोड़े, ऊँट तथा दास खरीदे थे। 4

7. विजयनगर की खोज मैकेन्जी ने की थी। वह इस्ट इण्डिया कम्पनी में अभियन्ता व पुरातत्त्वविद था। उसने विरूपाक्ष तथा पम्पा देवी के मंदिरों के पुजारियों से जानकारी प्राप्त की। उसने विजयनगर के क्षेत्र का सर्वेक्षण करवाया तथा रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें विजयनगर की खोज की पुष्टि की। 4

8. आईने-अकबरी अबुल-फजल द्वारा लिखित यह ग्रन्थ हर प्रकार की जानकारी से भरपूर है इसकी सीमाएँ भी रहीं परन्तु वे बहुत कम है। आईने-अकबरी मुगल इतिहास काल के पुर्ननिर्माण के लिए शोधकर्ताओं व इतिहासकारों को प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध करवाई है। 4

9. औपनिवेशिक शहरों अर्थात बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में एजेंटों और बिचौलियों के रूप में काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने ब्लैक टाऊन में बाजारों के आस-पास परंपरागत ढंग के ढालानी मकान बनवाए। उन्होंने भविष्य में पैसा लगाने के लिए शहर में बड़ी-बड़ी जमीनें खरीद ली थी। अपने अंग्रेज स्वामियों को प्रभावित करने के लिए वे त्यौहारों पर रंगीन भोजों का आयोजन करते थे। समाज में अपनी उच्च स्थिति को दर्शानें के लिए मंदिर भी बनवाए। मद्रास में कुछ दुबाश व्यापारी ऐसे भारतीय थे स्थानीय भाषा और अंग्रेजी भाषा बोलनी जानते थे। वे भारतीय तथा गोरों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाते थे। ब्लैक टाऊन में परोपकारी कार्यों और मंदिरों को संरक्षण प्रदान करने के कारण समाज में स्थिति काफी मजबूत थी। 4

खण्ड - ग

दो अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर :

10. हड़प्पा की खोज 1921 ई० में दया राम साहनी ने की थी। 2

11. सोने के सिक्के सर्वप्रथम प्रथम शताब्दी ई० में कुषाण शासकों ने जारी किए थे। इन सिक्कों का आकार तथा भार रोमन सम्राटों तथा ईरान के शासकों द्वारा जारी सिक्कों के बराबर होता था। 2

12. स्तूप क्यों बनाए जाते थे - स्तूप का शाब्दिक अर्थ है ढेर अथवा टीला। ऐसे टीले जिनमें महात्मा बौद्ध के अवशेषों या उनके द्वारा प्रयोग हुए सामान को गाड़ दिया गया था, बौद्ध स्तूप कहलाए। ये बौद्धों के लिए पवित्र स्थल है। 2

13. अलबिरूनी की ***दो*** समस्याएँ :

(i) सर्वप्रथम बाधा थी संस्कृत भाषा

(ii) भारतीय धार्मिक अवस्था तथा रीति-रिवाज 2

14. जोगी गोरखनाथ तथा अधीरनाथ के शिल्प थे ये उत्तरी भारत में बहुत लोकप्रिय थे। सूफी सन्तों पर भी इनका प्रभाव था। 2

15. अकबर के शासनकाल में भूमि की उर्वरा शक्ति के आधार पर भूमि को ***चार*** वर्गों में वर्गीकृत किया गया था :

(i) **पोलज :** सर्वाधिक उपजाऊ भूमि जिस पर हमेशा खेती होती थी।

(ii) **परौती :** वह भूमि जिस पर कुछ दिनों के लिए खेती रोक दी जाती थी ताकि वह अपनी खोई ताकत वापस पा सके।

(iii) **चचर :** वह भूमि जो तीन-चार वर्षों तक खाली रहती है।

(iv) **बंजर :** निम्न कोटि की भूमि जिसकी उर्वरा शक्ति बहुत कम थी। 2

16. मुगलों में हरम व्यवस्था में शाही महिलाओं की प्रमुखता थी। इसमें महिलाएँ बराबर की तथा एक जैसी हैसियत वाली नहीं थी। हरम में प्रमुख महिलाओं को तीन नामों से पुकारा जाता था - (i) बेगम (ii) अगहा (iii) अगाचा। 2

17. अकबर ने दीन-ए-इलाही की स्थापना 1582 ई० में की थी जिसमें सभी धर्मों की अच्छी बातें शामिल की थी। 2

18. पूना पैक्ट के बारे .....

गोलमेज़ सम्मेलनों के बाद अंग्रेज सरकार ने 1932 ई० में दलितों को पृथक चुनाव अधिकार दिया जिस का गाँधी ने विरोध किया अन्तत डॉ० अम्बेडकर और गाँधी जी के बीच समझौता हुआ जिसे पूरा पैक्ट कहा जाता है। 2

19. कांग्रेस ने साईमन कमीशन का विरोध क्यों किया :

साईमन कमीशन 1929 ई० में भारत पहुँचा इसके सभी सदस्य श्वेत थे। इस कारण सभी दलों व कांग्रेस ने इसका जोरदार विरोध किया। आयोग जहाँ भी गया लोगों ने साईमन वापिस जाओ के नारे लगाए। 2

खण्ड – घ

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर : 16

20. (क)

21. (क)

22. (क)

23. (घ)

24. (ख)

25. (घ)

26. (क)

27. (ख)

28. (ग)

29. (क)

30. (ख)

31. (घ)

32. (ख)

33. (ग)

34. (क)

35. (घ)

SET – D

खण्ड – क

1. चर्चा कीजिए कि पुरातत्व अतीत के पुनर्निर्माण का आरम्भिक चरण पुरातत्त्वविद् पुरावस्तुओं की प्राप्ति से करते हैं। इसके पश्चात् अवशेषों को प्राप्त करके उनका विश्लेषण करते हैं। इससे पुरातत्त्वविद् सभ्यता के जीवन का पुनर्निर्माण करते हैं। यह भौतिक अवशेष या कला या बर्तन, गहने, घर का सामान आदि है। यह भी उल्लेखनीय है कि केवल टूटी हुई या अनुपयोगी वस्तुएँ ही फेंकी जाती थीं। अन्य वस्तुएँ संभवतः पुनः चक्रित की जाती थीं या तो वे अतीत में खो गई थी या फिर संचयन के पश्चात् कभी दोबारा प्राप्त नहीं की गई थीं।

खोजों का वर्गीकरण : प्राप्त की गई वस्तुओं का फिर वर्गीकरण किया जाता है। वर्गीकरण का एक सामान्य सिद्धान्त प्रयुक्त पदार्थों जैसे पत्थर, मिट्टी, धातु, अस्थि, हाथी दांत आदि से संबंध में होता है। दूसरा और अधिक जटिल, उनकी उपयोगिता के आधार पर होता है : 'पुरातत्वविदों को यह तय करना पड़ता है कि उदाहरणतः कोई पुरावस्तु एक औजार है या एक आभूषण है या फिर दोनों अथवा आनुष्ठानिक प्रयोग की कोई वस्तु।

किसी पुरावस्तु की उपयोगिता की समझ अक्सर आधुनिक समय में प्रयुक्त वस्तुओं से उनकी समानता पर आधारित होती है। मनके, चक्कियाँ, पत्थर के फलक तथा पात्र इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। पुरातत्त्वविद् किसी पुरावस्तु की उपयोगिता को समझने का प्रयास उस संदर्भ के परीक्षण के माध्यम से भी करते हैं जिसमें वह मिली थी। क्या वे घर में मिली थीं, नाले में, कब्र में मिली है। 6

अथवा

मोहनजोदड़ों की सड़कें और गलियाँ सीधी होती थीं और एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं। मोहनजोदड़ो में निचले नगर में मुख्य सड़क 10.5 मीटर चौड़ी थी इसे प्रथम सड़क कहा गया हैं अन्य सड़के 3.6 से 4 मीटर तक चौड़ी थीं गलियाँ एवं गलियारे 1.2 मीटर (4 फुट) या उससे अधिक चौड़े थे। घरों के बनाने से पहले ही सड़कों व गलियों के लिए स्थान छोड़ दिया जाता था। उल्लेखनीय है कि मोहनजोदड़ो के अपने लम्बे जीवनकाल में इन सड़कों पर अतिक्रमण या निर्माण कार्य दिखाई नहीं देता। 6

2. नयनार और अलवार संत बेल्लाल कृषकों द्वारा सम्मानित होते थे। इसलिए आश्चर्य नहीं कि शासकों ने भी उनका समर्थन पाने का प्रयास किया। उदाहरणतयः चोल सम्राटों ने दैवीय समर्थन पाने का दावा किया और अपनी सत्ता के प्रर्दशन के लिए सुंदर मन्दिरों का निर्माण किया जिसमें पत्थर और धातु से बनी हुई मूर्तियों का सजाया गया।

इन सम्राटों ने तमिल भाषा के शैव भजनों का गायन इन मंदिरों में प्रचलित किया। उन्होंने ऐसे भजनों का संकलन एक ग्रन्थ (नवरम्) के रूप में करने का भी जिम्मा उठाया। 945 ई० के एक अभिलेख से पता चलता है कि चोल सम्राट परांतक प्रथम ने संत कवि अप्पार संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ एक शिव मंदिर

में स्थापित करवाई। इन मूर्तियों को उत्सव में एक जलूस में निकाला जाता था। सूफी संतों को धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का कारण था इन वजहों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे। जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो उलमा द्वारा शरिया लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया गया। ऐसे समय में सुल्तानों ने सूफी संतों का सहारा लिया जो अपनी अध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्‌भूत मानते थे और उलमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।

यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और अध्यात्मिक दशा सुधार लाने का कार्य करते है। शायद इस लिए शासक अपनी कब्र सूफी दरगाहों और खनकाहों के नजदीक बनाना चाहते थे। 6

अथवा

भक्ति आन्दोलन क्या था। इसके मुख्य विचारों और सिद्धान्त का वर्णन .....

भक्ति शब्द के उत्पत्ति भज्ज से हुई है जिसका अर्थ सेवा से लिया गया है अर्थात भक्ति व्यापक अर्थ में मनुष्य द्वारा ईश्वर के प्रति पूर्ण समपर्ण होता है। इसमें सामाजिक रूढ़ियाँ, ताना बाना, मर्यादाएँ तथा बंधनों की भूमिका नहीं होती। भक्ति आन्दोलन दक्षिण भारत से प्रारम्भ हुआ। धीरे-धीरे उत्तर की ओर फैला। इसके प्रसार में कबीर, गुरु नानक देव, मीराबाई, शंकराचार्य, रामानन्द, चैतन्य महाप्रभु इत्यादि ने योगदान दिया। इसके मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित है :

(i) एक ईश्वर में विश्वास

(ii) ईश्वर के प्रति समपर्ण

(iii) गुरू भक्ति पर विश्वास

(iv) मानव मात्र की समानता में विश्वास

(v) सामाजिक बुराईयों का विरोध

(vi) हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल

(vii) प्रेम की शुद्धता को महत्त्व

(viii) मूर्ति पूजा में अविविश्वास

3. विद्रोही सिपाहियों ने .....

अंग्रेजों के विरुद्ध सेनाओं को नेतृत्व प्रदान करने के विद्रोही सिपाहियों ने ऐसे राजाओं और शासकों की शरण ली जो अंग्रेजों से पहले नेताओं की भूमिका निभाते थे :

(i) सर्वप्रथम विद्रोही मेरठ पहुँचे तो उन्होंने दिल्ली पहुँचकर मुगल सम्राट बहादुरशाह से विद्रोह का नेतृत्व संभालने का आग्रह किया। बहादुरशाह इस समाचार से भयभीत और बेचैन दिखाई दिए। उन्होंने नाममात्र का नेता बनने की जिम्मेदारी तभी स्वीकार की जब कुछ सिपाही शाही शिष्टाचार की अवहेलना करते हुए लाल किले के मुगल दरबार में जा घुसे थे।

(ii) कानपुर में सिपाहियों और शहर के लोगों ने पेशवा बाजीराव द्वितीय के उत्तराधिकारी नाना साहिब को विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए मजबूर किया।

(iii) झांसी में भी लोग पहले बगावत पर उतरे और उनके आग्रह करने पर रानी लक्ष्मीबाई को नेतृत्व संभालने का आग्रह किया।

(iv) इसी प्रकार उन्होंने बिहार के आरा के स्थानीय जमींदार कुँवर सिंह को भी नेतृत्व संभालने के लिए आग्रह किया।

(v) अवध में नवाब वाजिद अली शाह जैसे लोकप्रिय शासक को गद्दी से हटा देने और उनके राज्य पर अधिकार कर लेने की यादें मन में अभी भी ताजा थीं। अतः लखनऊ में ब्रिटिश राज के खत्म के समाचार पर लोगों को मिलने लगे। 6

अथवा

See Q. No. **3** of **Set-A** 3rd Answer. 6

4. अखबार एक महत्त्वपूर्ण स्रोत क्यों है .....

अंग्रेजी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं में छपने वाले समकालीन अखबार भी एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है जो महात्मा गाँधी की गतिविधियों पर नजर रखते थे और उनके बारे में खबरें छापते थे। ये अखबार इस बात का संकेत है कि आम भारतीय उनके बारे में क्या सोचते थे। लेकिन अखबारी ब्योरो को पूर्वाग्रह से मुक्त नहीं माना जाना चाहिए। ये अखबार प्रकाशित करने वाले ऐसे लोग थे जिनकी अपनी राजनीतिक सोच और विश्व दृष्टिकोण था उनके विचारों से ही तय होता था कि क्या प्रकाशित किया जाए और घटनाओं की रिपोर्टिंग किस तरह की जायेगी। इसलिए लंदन से निकलने वाले अखबार के विवरण भारतीय राष्ट्रवादी अखबार में छपने वाली रिर्पोट जैसे नहीं हो सकते थे।

हमें इन रिर्पोटों को देखना ही चाहिए। लेकिन उनके आधार पर नतीजे निकालते हुए खास एहतियात भी बरतनी चाहिए। इन अखबारों के हर वक्तव्य को अर्थात घटनाक्रम का शब्दशः सच्चा ब्योरा नहीं माना जा सकता अक्सर उनमें ऐसे अफसरों की आशंकाओं और बेचैनियों की झलक मिलती है जो किसी आन्दोलन की नियंत्रित नहीं करवा रहे थे और इसके प्रसार के बारे में भी

बेचैन थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि महात्मा गाँधी को गिरफ्तार करना चाहिए या नहीं अथवा गिरफ्तारी का क्या परिणाम होगा। औपनिवेशिक सरकार जनता और उसकी गतिविधियों पर जितनी नजर रखती थी अपने शासन के आधार के बारे में उसकी चिंता उतनी ही बढ़ती जाती थी। 6

अथवा

सविनय अवज्ञा आन्दोलन की प्रगति यह आन्दोलन 1930-30 के बीच चला था इसे नमक आन्दोलन भी कहा जाता है।

(i) बम्बई, बंगाल, मद्रास, मध्य प्रदेश, संयुक्त प्रांत आदि में लोगों ने नमक स्वयं बनाया और उससे नमक कानून भंग हुआ।

(ii) घरासाना में हजारों लोगों ने नमक के गोदामों पर आक्रमण किया और पुलिस के अत्याचारों से कुछ व्यक्ति मरे और कई घायल हुए।

(iii) कई स्थानों पर कर्मचारियों ने सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र दिया और विधानमण्डलों की सदस्यता त्याग दी।

(iv) विदेशी वस्त्रों को जलाया गया तथा शराब की दुकानों पर धरने दिए गए।

(v) अधिकांश मुसलमानों ने इस आन्दोलन में सरकार का साथ दिया।

(vi) श्रीमती सरोजनी नायडू और खान अब्दुल गफ्फार खान ने इस आन्दोलन में सराहनीय कार्य किया। 6

खण्ड - ख

चार अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर :

5. कौटिल्य, चन्द्रगुप्त मौर्य का गुरू एवं प्रधानमंत्री था। कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीति से संबंधित है इससे पता चलता है चन्द्रगुप्त मौर्य ने कैसे विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इसमें किस प्रकार प्रशासन लागू किया। इस ग्रन्थ से हमें पता चलता है कि राजा में किस प्रकार के गुण होने चाहिए। यह ग्रन्थ मौर्यकाल के समाज पर भी प्रकाश डालता है। सबसे रोचक बात यह है कि इसमें दिए गए शासन के सिद्धान्तों की झलक आज के भारतीय शासन में देखी जा सकती है। 4

6. विदेशी यात्रियों के भारत में आने के निम्नलिखित उद्देश्य थे :

(i) कार्य एवं रोजगार की तलाश में

(ii) धर्म प्रचार करने तथा तीर्थयात्रा करना

(iii) साहस की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करना

(iv) दूसरे देशों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए 4

7. विजयनगर में जल प्रबन्धन एक चुनौती थी क्योंकि पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण पानी की दिक्कत रहती थी। यहाँ के शासकों ने सभी धाराओं के साथ-साथ बांध बनाकर कई आकार के हौज बनाए। पानी को इकट्ठा करने और इसे शहर तक ले जाने के लिए व्यापक प्रबन्ध किया गया था। यहाँ का सबसे प्रसिद्ध हौज कमलपूरम था जो 15वीं शताब्दी में बना था इस हौज के पानी से न केवल आस-पास के खेतों को सींचा जाता था बल्कि इसे एक नहर द्वारा राजकीय केन्द्र तक भी ले जाया जाता था। 4

8. जमींदारों की भूमिका क्यों महत्त्वपूर्ण थी – मुगल काल में जमींदारों का काफी महत्त्व था, वे अपने पास जमीन खरीदने, बेचने हस्तांतरण गिरवी रखने का अधिकार था। विभिन्न पदों पर उन्हें नियुक्त किया जाता था। अपने क्षेत्र में विशेष पोषाक छोड़ा, वाद्य यंत्र बजाने का अधिकार उनके पास था। भू-राजस्व से इन्हें एक निश्चित मात्रा में कमीशन मिलता था। इनके पास शान्ति व्यवस्था कायम करने के लिए एक सेना भी होती थी। इनके क्षेत्र में शासक या शाही परिवार का कोई सदस्य गुजरता था तो उन्हें वहाँ उपस्थित होना पड़ता था। राज्य के प्रति स्वामी भक्ति रखता था। कुछ जमींदार लोगों की सुविधा के लिए कुँआ खुदवाना तथा धर्मशालाएँ बनाना भी जरूरी था। 4

9. 1869 ई० में स्वेज नहर को खोला गया। इस नहर ने लाल सागर व भूमध्य सागर को मिला दिया जिससे भारत से यूरोप के बीच जलमार्ग की दूरी कम हुई और बम्बई से बंदरगाह से व्यापार में वृद्धि हुई। 4

खण्ड – ग

दो अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर :

10. हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण थे :

(i) भूचाल

(ii) अकाल

(iii) बाढ़े। 2

11. मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण थे :

(i) अशोक की मृत्यु

(ii) कमजोर उत्तरधिकारी

(iii) अहिंसा की नीति

(iv) विदेशी आक्रमण 2

12. गांधार कला का विकास कनिष्क के काल में हुआ था। यहाँ पर यूनानी कला का विकास किया गया। 2

13. रिहला नामक वृतांत इब्नबतूता द्वारा लिखा गया। इसे सफरनामा के नाम से अनुवादित किया गया है। रिहला में भारत के बारे में वर्णन किया गया है। 2

14. खालसा पंथ की स्थापना 13 अप्रैल, 1699 ई० को गुरू गोबिन्द सिंह द्वारा आनन्दपुर साहिब के स्थान पर की गई। 2

15. मुगल काल में नई फसलों का उत्पादन हुआ जिनमें रेशम, तम्बाकू, मक्का, पटसन आदि शामिल थीं। 2

16. बादशाहनामा शाहजहाँ के काल का ईतिवृत है इसका लेखक हमीद लहौरी था जो अबुल फजल का शिष्य था। इसको तीन खण्डों में विभाजित किया गया है। इसमें शाहजहाँ के काल का वर्णन है। 2

17. औंरगजेब ने देश में कट्टर हिन्दू विरोधी नीति अपनाई थी। उसने हिन्दुओं पर जजिया और तीर्थयात्रा कर लगाया और हिन्दू मन्दिरों को गिराया। 2

18. पहाड़िया लोग बाहरी लोगों पर आक्रमण करते थे तो उनमें एक लक्ष्य शक्ति प्रदर्शन कर अपनी धाक जमाना भी रहता था तथा बाहरी लोगों के साथ राजनैतिक संबंध स्थापित करने के लिए भी ये आक्रमण किए जाते थे। भयभीत होकर मैदानी लोग पहाड़िया लोगों को नियमित खिराज का भुगतान करते थे। 2

19. 1929 ई० में आयोजित लाहौर अधिवेशन का महत्त्व यह है कि इस अधिवेशन के अध्यक्ष युवा जवाहर लाल नेहरू थे तथा इस अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वतन्त्रता को अपना लक्ष्य घोषित किया तथा इस सम्बन्ध में प्रस्ताव पास किया गया। 2

खण्ड – घ

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर : 16

20. (ख)

21. (क)

22. (ग)

23. (ग)

24. (ख)

25. (ग)

26. (ख)

27. (क)

28. (ख)

29. (घ)

30. (ग)

31. (ख)

32. (घ)

33. (ग)

34. (ख)

35. (ख)